1. **‘भारतीय नारी’ पर माइंड बनाकर| निबंध लेखन कीजिए|**

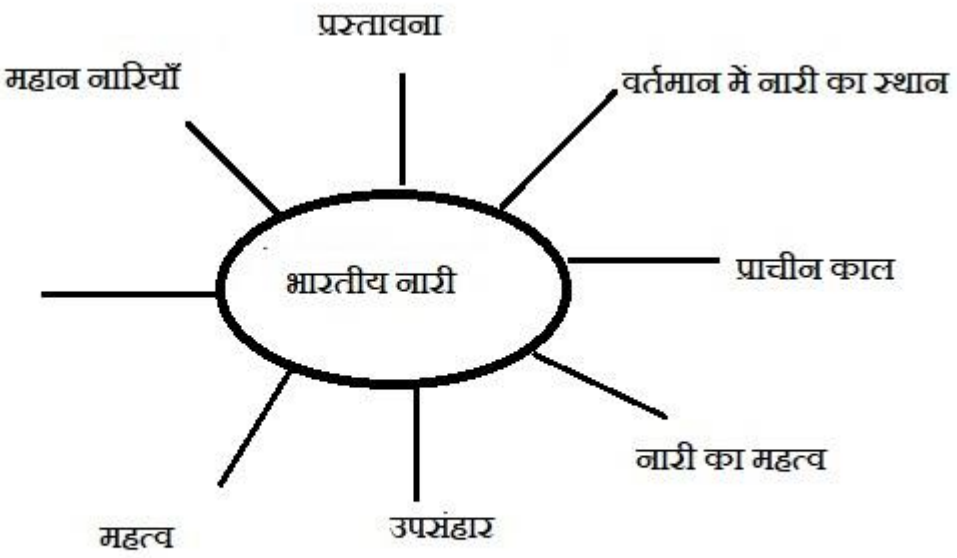

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

महात्मा गाँधी अपना काम अपने हाथ से करने पर बल देते थे| वे प्रत्येक आश्रमवासी से आशा करते थे कि वह अपने शरीर से सम्बंधित प्रत्येक कार्य, सफाई तक स्वयं करेगा| उनका कहना था कि जो श्रम नहीं करता है, वह पाप करता है पाप का अन्न खाता है| ऋषि-मुनियों ने कहा है- 'बिना श्रम किए जो भोजन करता है, वह वस्तुतः चोर है|' महात्मा गाँधी का समस्त जीवन-दर्शन श्रम-सापेक्ष था| उनका समस्त अर्थशास्त्र यही बताता था कि प्रत्येक उपभोक्ता को उत्पादन कर्ता भी होना चाहिए| उनकी नीतियों की उपेक्षा करने के परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं| न गरीबी कम होने में आती है, न बेरोजगारी पर नियंत्रण हो पा रहा है और न अपराधों की वृध्दि को रोकना हमारे वश की बात हो रही है|

(क) महात्मा गाँधी का समस्त जीवन-दर्शन किस प्रकार श्रम सापेक्ष था?
(ख)'चोर' की परिभाषा क्या है?
(ग) गाँधी जी पापी किसे मानते थे?
(घ) एक-एक पर्यायवाची लिखिए- 'समस्त', 'निंयंत्रण'
(ड) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए|